हरियाणवी लोक साहित्य और समाज

प्रवक्ता–निधि सैनी
हिन्दू गर्ल्ज कालेज, जगाधरी।

आदमी ने जबसे धरती पर पांव रखा, वह तभी से बोलने लगा। अपने मन की बात कहने और दूसरे की बात समझने में भ़ाशा/भोली आदि की जरुरत पड़ती है। ऐसा नहीं हो सकता कि प्रथम षब्द जो प्रथम व्यक्ति के मुख से निकला, किसी के द्धारा बुलवाया गया षब्द था। वह निषचित रुप से प्राकृतिक षब्द था। हरियाणवी लोक भ़ाशा है और उसका उदभव तभी से है, जब से हरियाणा क्षेत्र के लोंगों ने भ़ाशा का प्रयोग करना सीखा। भ़ाशा और संस्कृति दोनों का ही भौतिक आधार व्यक्ति हैं। इनके अभिव्यक्त होने वाले रुपों में विभिन्नता और अस्थिरता होना स्वाभाविक हैं। पर व्यक्ति समाजनिश्ट हैं। इस नाते उसकी व्यक्तिगत भ़ाशा और संस्कृति में ऐसे मूलभूत तत्व है, जो कि समूचे सामाजिक समुदाय के प्रत्येक सदस्य की भ़ाशा और संस्कृति में पाए जाते हैं। सैद्धान्तिक दृशटि से असीम विविधता के बावजूद हम व्यावहारिक दृशटि से कुछ सामान्य तत्वों के आधार पर भ़ाशा और संस्कृति के समरुप की काल्पनिक सृशटि कर लेते हैं, जो षास्त्रीय अध्धयन के लिए अनिवार्य हैं। हरियाणा के साहित्य में लोक साहित्य जन साहित्य एंव षिश्ट ये तीन प्रकार के साहित्य प्रचलित हैं। इनमें से मैं अपने षोध पत्र का व़िशय लोक साहित्य को लेते हुए प्रचलित लोक साहित्यों के व़िशय में चर्चा करेंगें।

भारत में लोक साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन हैं। हरियाणा यद्यपि भारत के मानचित्र पर 1 नवम्बर, 1966 ई0 को आया परन्तु सांस्कृतिक दृशटि से इसका अस्तित्व प्राचीन काल से रहा

है तथा अंग्रेजों के षासनकाल में 19 वीं षती के उतरार्ध्र में तत्कालीन पंजाब प्रषासन के अंग्रेज अधिकारियों का ध्यान हरियाणा की सभ्यता और संस्कृति के वैषिश्टय की ओर अनायास ही आकृश्ट हो गया था क्योंकि उस समय में पूरे विष्व में लोक साहित्य के संकलन का कार्य पूरे जोर–षोर स`चल रहा था। अम्बाला के तत्कालीन डिप्टी कमिष्नर सर आर.सी.टेंपल ने दी लीजींडस आफ पंजाब के तीसरे भाग में जो 51 लोक गाथाएं प्रस्तुत की है, उनमें से 17 लोक गाथांए हरियाणा मे गाई जाती हैं। अंग्रेज अधिकारियों का लोक साहित्य पर कार्य करने का एक अन्य प्रमुख कारण यहां के लोंगों के रहन सहन, रीति रिवाज तथा परम्परा और सांस्कृतिक से सुपरिचित होना भी था, ताकि वे प्रदेष तथा लोंगों के हदय, दोनों पर राज कर सकें।

हरियाणवी लोकसाहित्य पर डा.षंकरलाल यादव द्धारा किया गया कार्य हरियाणवी लोक साहित्य का मील स्तम्भ है।

लोक साहित्य जन जीवन का दर्पण हैं। यह जनता के हदय का उदगार हैं। सर्वसाधारण जनता जो कुछ सोचती हैं। जिन भावों की अनुभूति करती है, उसी का प्रकाषन उसके साहित्य में उपलब्ध होता हैं। ग्रामीण लोग विभिन्न संस्कारों के अवसर पर तथा विभिन्न मौसमों में लोकगीत गाकर अपना मनोरंजन करते हैं। कहानियां सुनना तथा सुनाना उनके मन बहलाव का अनन्य साधन हैं। समय–समय पर चुभती हुई लोकोक्तियों तथा भाव भरे मुहावरों का प्रयोग गांवों के निवासी अपने हदयगत विचारों का प्रकाषन करते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य पांच भागों में बंट गया।

लोक गीत, लोकगाथा, लोक कथा, लोक नाटय तथा लोक सुनभाशित परन्तु ये कहना अतिष्योक्ति न होगी यह सब संस्कृति और सभ्यता से जुड़े हैं।

जोगियों के साकों में भूरा–बादल नामक वीरगाथा एक अत्यन्त लोकप्रिय कृति हैं। जो हरियाणवी क्षेत्र में लगभग सभी जोगियों द्धारा गाई जाती हैं।

श्सुनिए देवर भूरे हो, तूं षर्म हजूर।

ना म्हारे गोदी आंगली, म्हारा पीहर दूर,

बेड़ा पडया समद में खेवटिया दूर।

राणा को बंध छुड़ादे देवर तू षर्म हजूर।।श

भाउ–साका में जनकवि निगाही ने, जो स्वंय पानीपत के तीसरे युद्ध का द्रश्ट था और सोनीपत के आस–पास का निवासी, वीर सदा षिवराव भाउ के पानीपत के युद्ध में जूझने का, हरियाणवी भ़ाशा में, फड़कता हुआ वर्णन किया हैं। जब लोक गायक षनिगाहीष् भाउ को ष्मुछैल सूरमाष् के नाम से सम्बोधित करते हैं, तो श्रोताओं की भुजांए फड़कने लगती हैं। लाल किले की विजय का वर्णन जोगी निगाही ने इस प्रकार किया हैः–

श्सुमर निगाही सुरस ही तूं पाक इलाही

चलता भाउ पेषवा नौबत बजवाई

गोले अर बारुद की पेटी भरवाई

मंजलों–मंजलों चालते ना ढील लगाई।

दिल्ली मअं आये पेषवा होंणी नै चाही।

गाजुद्धीन खां वजीर ने हिकमत बतलाईं।

जामा महजत की लई सूध धर तोप चढ़ाई ।।श

इसी प्रकार लोकगाथांए भी साहित्य और संस्कृति से जुड़ी हैं।

षनिहालदेष हरियाणा की लोकगाथाओं में से एक बड़ी रोचक एंव लोकप्रिय गाथा हैं। इसे उतरी भारत का महाकाव्य कहा जाए तो, कोई अतिषयोक्ति नहीं होगी। हरियाणा में जोगी परम्परा में इन गाथाओं के गायक हुए हैं। यो जोगी सांरगी पर, विषेश कर श्रावण मास में गांव–गांव जाकर, इस लोकगाथा से लोंगों का मनोरंजन करते हैं। राजस्थानी लोकगाथा ष्ढोलामारुष हरियाणवी गाथा निहालदे का एक प्रासांगिक कथा मात्र हैं।

सुलतान केलोगढ़ में राजा मघ के महिला उद्यान में पहुंच जाता हैं। बाग की मालिन उसके इस व्यवहार पर रोंश प्रकट करती हैं। सुल्तान अपने क्षत्रियत्व की दुहाई देता हैंः–

श्बाग जानना बेटटी झूले राजा मघमान की धंवर निहाल।

बेरा पट जा राजा मघमान नै तनै देगा सूली पर टांग।

हट कै बोला पोता बैन का सुण री मालन मेरा एक जुआब।

मैं छतरी जन्म का चालूं छतरापन की चाल।।श

गुग्गा नौमी हरियाणा में श्रद्धा और विष्वास से प्रतिवर्श भाद्रपद की कृश्ण पक्षीय नवमी को मनाई जाती हैं। यह लोक विष्वास और आस्था का त्यौहार है, जोकि गुग्गा की स्मृति में मनाया जाता है। गुग्गा नामक एक वीर पुरुश हुआ हैं। जिसकी लोकगाथा की हरियाणा के गांव–गांव में समैयों द्धारा गाई जाती है। गुग्गा गुरु गोरख का षिश्य था, जिसने बाद में सिद्धी प्राप्त की और नौमी के दिन भूमि–समाधि ले लेने के कारण संसार में अमरता को प्राप्त किया। यद्यपि गुग्गा राग वीरगाथा है तथापि इसमें यंत्र–तंत्र हरियाणवी जनमानस आस्था एंव विष्वास के दर्षन भी होते हैं। गुग्गा का दिल्ली के बादषाह से युद्ध होने से पूर्व ही, गुग्गा की पत्नी सीरियल को अपषकुन दिखाई देने लगते हैं।

श्बोलै सरियल के कहै सुण सासु मेरी बात,
सुख सोई रंग महल में मन्नै आये आल–जंजाल,

बिन्दी टूटी भौं पड़ी मेरी बलखागी थी नाथ,

सौंपनें में हलचल होई तेरा डिग्या कंवर का राज।।श

लोक–साहित्य की जन विधाओं को डा0 षंकर लाल यादव तथा डा0 लालचन्द गुप्ता मंगल ने प्रकीर्ण साहित्य के अर्न्तगत रखा हैं, डा0 कृश्णदेव उपाध्याय ने उनके लिए लोकसुभाशित षब्द सुझाया। आम ग्रामीण लोग अपने दैनिक व्यवहार में कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। ष्लोकोक्तिष लोक साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। वस्तुतः लोक साधना का प्रत्येक षब्द, प्रत्येक स्वर, युग–युगांतरों के सांस्कृतिक एंव सामाजिक भाव बोध को सबसे अधिक लोकोक्तियों के सूत्र में बांधे हुए हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हरियाणवी साहित्य सम्पूर्ण रुप से हरियाणा की संस्कृति, रिति–रिवाज, परम्पराओं, सभ्यता से जुड़ा हैं।